SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन

वीणा कुमारी, शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
वीणा कुमारी, शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर,
बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/07/2020
Revised on : -----
Accepted on : 20/07/2020
Plagiarism : 01% on 14/07/2020

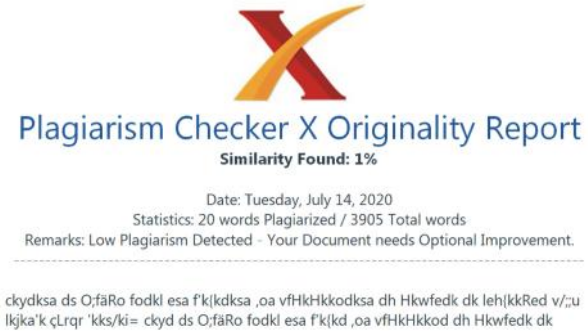

शोध सारांश :

प्रस्तुत शोधपत्र बालक के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक एवं अभिभावक की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर प्रस्तुत किया गया है। समीक्षात्मक अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह बात सामने आई है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास को न केवल माता–पिता एवं पूर्वजों से मिले अनुवांशिक गुण ही प्रभावित करते हैं बल्कि जिस वातावरण में बालक निवास करता है, जिन–जिन लोगों के संपर्क में आता है, जिन संस्थानों और संगठनों से उसका जुड़ाव होता रहता है। उन सभी लोगों के गुण तथा अवगुण का पूर्णतः या आंशिक रूप से बालक के व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव पड़ता हैं। अध्ययन से स्पष्ट है कि बालक के विकास को माता–पिता के गुण, घरेलू वातावरण, शिक्षक के व्यक्तिगत गुण, विद्यालय का वातावरण, साथी–समूह के गुण, आस–पास का सामाजिक वातावरण, घर की आर्थिक स्थिति, धर्म व संस्कृति का प्रभाव, सांस्कृतिक परंपराओं एवं रीति–रिवाजों का प्रभाव एवं मास–मीडिया तथा इंटरनेट आधारित अत्याधुनिक डिजिटल उपकरणों जैसे स्मार्टफोन आदि साधनों का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास पर पड़ते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि अभिभावक अर्थात् माता–पिता एवं शिक्षक का सही ससमय मार्गदर्शन बालक को व्यक्तित्व का उत्तम स्वामी बनाने में सहायक हो सकता है। निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षक एवं अभिभावक अर्थात् माता–पिता के महत्वपूर्ण भूमिका को कभी भी नकारा नहीं जा सकता है।

मुख्य शब्द :

व्यक्तित्व विकास, अभिभावक, माता–पिता, शिक्षक, घरेलू एवं विद्यालय के वातावरण।

परिप्रेक्ष्य :

मानव जीवन का प्रारंभ जन्म से नहीं होता बल्कि जीवन का प्रारंभ गर्भधारण के समय से ही हो जाता है जन्म तो मानव विकास के क्रम में घटित होनेवाला एक परिवर्तन है और यह वह परिवर्तन है जिसमें बालक आंतरिक वातावरण को त्याग कर वाह्य वातावरण में पदार्पण करता है। आंतरिक वातावरण को त्यागना और वाह्य वातावरण में बालक का पदार्पण होना एक प्राकृतिक एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है दोनों वातावरण का महत्व बालक की वृद्धि एवं विकास के लिए अभूतपूर्व एवं आवश्यक है। बालक की वृद्धि कुछ वर्षों के पश्चात अत्यंत धीमी गति से चलने लगती है लेकिन विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन प्रयत्न जीवन चलती रहती है। बालक के विकास पर आनुवंशिकता तथा वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है इसलिए बाल विकास के अध्ययन की शुरुआत गर्भावस्था से होकर शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था एवं प्रौढ़ावस्था जिसे परिपक्ववावस्था भी कहा जाता है, तक जारी रहता है। बालक का सर्वांगीण विकास के अंतर्गत न केवल शारीरिक विकास बल्कि मानसिक विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास एवं नैतिक विकास का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है इसलिए मनोविज्ञान की जिस शाखा में इसका अध्ययन किया जाता है उसे पहले बाल मनोविज्ञान कहा जाता था। लेकिन अब वर्तमान समय में इसे बाल्यावस्था एवं विकास के नाम से अध्ययन किया जाने लगा है यह बालक के व्यक्तित्व के विकास में उसके सर्वांगीण विकास के महत्व को दर्शाता है।

बालक के सर्वांगीण विकास एवं उसके व्यक्तित्व के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन के लिए मनोविज्ञान के इस आधुनिक शाखा जिसे पहले बाल मनोविज्ञान के अंतर्गत अध्ययन किया जाता था लेकिन वर्तमान समय में बाल्यावस्था एवं उसका विकास के अंतर्गत अध्ययन किया जाने लगा है। जिसके अंतर्गत मुख्य रूप से शैशवावस्था, बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था तक का अध्ययन समाहित है। जिसका मुख्य उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास एवं उसके जीवन को सुखमय, समृद्धशाली, स्वाबलंबी, कौशलयुक्त, संस्कारयुक्त, एवं सर्वगुण संपन्न बनाकर उच्च व्यक्तित्व का स्वामी बनाने से है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मनोविज्ञान की इस शाखा का अध्ययन बालकों के सर्वांगीण विकास एवं समाज में महत्वपूर्ण योगदान की स्वीकृति अब मिलने लगी हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने में रुचि रखता है वह इस बात में भी रुचि रखता है कि हमारे बच्चे किस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हैं? किस–किस प्रकार के कौशलों को सीखते हैं? विभिन्न प्रकार के योग्यताओं को कैसे आत्मसात करते हैं? इसलिए मनोविज्ञान की इस नवीन शाखा का ज्ञान न केवल मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षकों के लिए ही महत्वपूर्ण और उपयोगी है बल्कि अभिभावकों, माता–पिता एवं जन सामान्य के लिए भी इस विषय का ज्ञान रखना बहुत उपयोग होता जा रहा है यही कारण है कि इस विषय की लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

बालक के व्यक्तित्व का विकास आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही वातावरण पर निर्भर करता है। आंतरिक वातावरण बालक को उसके माता–पिता और पूर्वजों से मिले हुए वह गुण हैं जो उन्हें अनुवांशिकता के तौर पर प्राप्त होते हैं यह गुण बालक को जन्म से पूर्व गर्भावस्था के दौरान ही प्राप्त होता है। वही बाह्य वातावरण बालक के जन्म के पश्चात् उपलब्ध वातावरण से प्राप्त होता है, जिसमें सामंजस्य स्थापित करते हुए बालक अपना विकास करता है वस्तुतः इस विषय वस्तु का अध्ययन बाल्यावस्था एवं विकास के अंतर्गत किया जाता है जिसका सीधा संबंध बालक के व्यक्तित्व के विकास से भी है।

व्यक्तित्व की परिभाषा पर एक दृष्टि :

व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग सामान्य बातचीत के क्रम में अक्सर किया जाता है वस्तुतः व्यक्तित्व शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता का परिचायक है जिसे सभी व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने तथा पारस्परिक संबंधों की दृष्टि से विशेष महत्व देते हैं। सामान्य अर्थों में व्यक्तित्व से तात्पर्य शारीरिक गठन, रंग रूप, वेशभूषा, बातचीत करने के ढंग तथा कार्य एवं व्यवहार जैसे विभिन्न गुणों के व्यक्ति में समावेशन से लगाया जाता है। लेकिन यह एक संकुचित अर्थ है वैज्ञानिकों की दृष्टि से व्यक्तित्व एक अत्यंत जटिल, भ्रामक तथा अस्पष्ट प्रकृति वाला प्रत्यय है जिसकी सर्वमान्य, पूर्णतया यथार्थ एवं स्पष्ट परिभाषा देना न केवल कठिन ही है बल्कि एक असंभव सा

कार्य है। फिर भी मनोवैज्ञानिकों व शिक्षाशास्त्रियों ने व्यक्तित्व के संप्रत्यय एवं उसकी परिभाषा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। विद्वानों द्वारा व्यक्तित्व विषय पर अभी तक दिए गए परिभाषाओं को निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त कर अध्ययन किया जाता है, जो निम्नलिखित हैं :

1) संगठन की दृष्टि से परिभाषा
2) विशेषक की दृष्टि से परिभाषा, एवं
3) अंतःक्रिया की दृष्टि से परिभाषा

संगठन की दृष्टि से परिभाषाओं का अध्ययन करनेवाले विद्वानों की धारणा है कि व्यक्तित्व एक इकाई है और यह इकाई संगठित है, यही संगठन वातावरण से क्रिया और प्रतिक्रिया करता रहता है तथा वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता हैं, इस दृष्टि से व्यक्तित्व एक पूर्ण इकाई है इसलिए इसके समग्र रूप का अध्ययन करना उपयुक्त है। इस धारणा को मानने वाले विद्वानों का यह भी मानना है कि व्यक्तित्व एक गत्यात्मक संगठन है।

विशेषक की दृष्टि से परिभाषाओं का अध्ययन करनेवाले विद्वानों की धारना है कि कोई भी व्यक्ति विभिन्न गुणों में एक दूसरे के समान नहीं हो सकता है। इस विचारधारा का समर्थन करने वाले विद्वानों द्वारा दिए गए व्यक्तित्व की परिभाषाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसे अन्य व्यक्तियों से भिन्न या अलग करता है। अर्थात् कोई भी दो व्यक्ति अपने विभिन्न गुणों में एक समान नहीं हो सकते हैं।

अंतःक्रिया की दृष्टि से परिभाषाओं का अध्ययन करनेवाले विद्वानों की धारणा है कि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है जिसका अध्ययन सामाजिक परिवेश में रखकर ही किया जा सकता है इसलिए इस विचारधारा को मानने वाले विद्वान यह मानते हैं कि व्यक्ति का व्यक्तित्व एक अनोखा एवं अभूतपूर्व गुण है जो उसे अपने वातावरण में अद्वितीय सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए किसी एक दृष्टिकोण से व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता लगाना या पूर्वक कथन करना संभव नहीं है क्योंकि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों की समूह का एक समग्र संगठन है। इसलिए इसका अध्ययन समग्रता के साथ किया जाना चाहिए।

शोध अध्ययन की आवश्यकता :

मनुष्य ईश्वर की अनुपम, अद्‌भुत एवं अद्वितीय कृति है इसे ब्रह्मांड के समस्त जीवो में सर्वोत्तम माना गया है यह एक ऐसा प्राणी है जो ब्रह्मांड के समस्त प्राणियों से अलग मानसिक व बौद्धिक क्षमता रखता है। इसी मानसिक एवं बौद्धिक क्षमताओं के कारण ही मनुष्य ब्रह्मांड के समस्त प्राणियों व जीव एवं जंतुओ को नियंत्रण में रखने में समर्थ हुआ है। यह बौद्धिक क्षमता ही है जिसके सकारात्मक एवं सृजनात्मक उपयोग से मनुष्य अपना ही नहीं बल्कि समस्त सृष्टि का उपकार भी कर सकता है। दूसरी तरफ अगर व्यक्ति अपनी मानसिक एवं बौद्धिक क्षमताओं का नकारात्मक एवं विध्वंसात्मक उपयोग करके विनाश की प्रलय लीला भी रच सकता है। इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि मनुष्य की बौद्धिक क्षमता का सम्यक, सकारात्मक एवं सृजनात्मक विकास हो ताकि मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमता का सृजनात्मक उपयोग कर सके। सृजनात्मक एवं सकारात्मक उपयोग व्यक्ति या बालक के व्यक्तित्व के सम्यक, समग्र एवं सर्वांगीण विकास पर ही निर्भर करता है क्योंकि अगर हम प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल, आधुनिक काल एवं वर्तमान उत्तर आधुनिक काल पर गौर करें तो पाते हैं कि उच्च ज्ञानी एवं बुद्धिमानी व्यक्ति भी अपने ज्ञान एवं बुद्धि का सकारात्मक एवं सृजनात्मक उपयोग तभी कर सकता है जब उसके व्यक्तित्व का सम्यक, समग्र एवं सर्वांगीण विकास हुआ हो।

सूचना एवं संप्रेषण क्रांति के वर्तमान दौर में सूचनाओं तक तीव्र गति से पहुंचने कि क्षमता का विकास व्यक्तिवादी ना होकर सर्वव्यापी हो गई है इसकी पहुंच न केवल बड़े बुजुर्गों तक ही रही है बल्कि मोबाइल तकनीक के अत्याधुनिक साधन विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों तक हो चुकी है विद्यार्थी जब चाहे, जहां भी चाहे विभिन्न सूचनाएं त्वरित गति से प्राप्त कर सकता है। वह भी न केवल श्रव्य साधन के रूप में या न केवल दृश्य साधन के रूप में बल्कि श्रव्य और दृश्य दोनों साधनों के समन्वित रूप में सूचनाओं को प्राप्त करना एक सामान्य बात हो गई

हैं। ऐसी स्थिति में बालक जो देखता एवं सुनता है उसका गहरा प्रभाव उसके मन और मस्तिष्क पर पड़ता है परिणामस्वरूप वह अपने आप को उसी रूप में बनाना चाहता है। अपने आप को उसी रूप में बनाने की चाहत का असर उसकी सोच, उसकी कार्यप्रणाली एवं उसके व्यवहार में परिलक्षित होने लगता है जो धीरे–धीरे व्यक्तित्व का रूप धारण करने लगती है।

व्यक्तित्व का विकास निरंतर चलने वाली एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जिसका सम्यक, समग्र एवं सर्वांगीण विकास न केवल विद्यालययी वातावरण बल्कि घर का वातावरण, पास–पड़ोस का वातावरण एवं जिस वातावरण में बालक समय व्यतीत करता है उसका आवश्यक रूप से एक समान होना आवश्यक है क्योंकि यह सामान्य धारणा रही है कि भारतीय संस्कारों, विद्यालययी परिवेश, बालक के साथी–समूहों का वातावरण एवं बालक को शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक का कार्य, व्यवहार एवं उनका व्यक्तित्व बालकों के व्यक्तित्व के विकास को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। साथ ही यह धारणा भी रही है कि बाल्यावस्था बालकों के व्यक्तित्व विकास की प्राथमिक एवं महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसका बालक के व्यक्तित्व विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व के विकास के लिए यह आवश्यक है कि बाल्यावस्था से ही बालक की शिक्षा–दीक्षा ऐसे परिवेश में हो जिससे कि बालक के व्यक्तित्व का विकास सम्यक, समग्र, सर्वांगीण, सकारात्मक तथा सृजनात्मक दिशा में कार्यशील करने में सहायक हो सके। इसके लिए ना केवल पारिवारिक संस्कारों बल्कि विद्यालययी वातावरण तथा शिक्षकों के व्यक्तित्व शीलगुण का प्रभाव बालकों के व्यक्तित्व विकास में कहां तक प्रभावित करता है इसका अध्ययन प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है।

शोध अध्ययन का शीर्षक :

बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भूमिका।

शोध अध्ययन का उद्देश्य :

बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भूमिका का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित दो उद्देश्य निर्धारित किए गए :

(1) बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों और विद्यालययी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

(2) बालकों के व्यक्तित्व विकास में अभिभावकों और घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन हेतु परिकल्पनाएँ :

बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भूमिका का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित दो परीकल्पनाएँ निर्धारित की गई :

1) बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों एवं विद्यालययी वातावरण के मध्य कोई संबंध नहीं है।

2) बालकों के व्यक्तित्व विकास में अभिभावकों एवं घरेलू वातावरण के मध्य कोई संबंध नहीं है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा :

संबंधित साहित्य की समीक्षा से यह ज्ञात हुआ है कि, बालकों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों एवं अभिभावकों की महती भूमिका होती है। बालक जिस वातावरण में, जिन लोगो के संपर्क में एवं जिस पारिवारिक वातावरण में, जिस सामाजिक तथा शैक्षणिक वातावरण में रहता है उसका उसके व्यक्तित्व के विकास पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व के विकास से संबंधित अभी तक हुए कुछ प्रमुख अध्ययनों का विवरण निम्नलिखित है :

1. मिश्रा, हरिशंकर ने 2011 में जबलपुर शहर के शैक्षणिक एवं तकनीकी विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों के व्यक्तित्व विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया। उनके अध्ययन का उद्देश्य शैक्षणिक एवं तकनीकी विद्यालयों के बालकों की बुद्धि का अध्ययन करना एवं दोनों समूहों के बालकों की यांत्रिक रूचि का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में पाया गया कि दोनों समूहों अर्थात् सामान्य शैक्षणिक व तकनीकी विद्यालयों के बालकों के समूहों के बुद्धि परीक्षण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। लेकिन दोनों समूहों के छात्रों में खेलने, पढ़ने,

शारीरिक व्यायाम करने आदि गतिविधियों की रूचि सामान्य पाई गई, वहीं तकनीकी पाठ्यक्रम के बालकों के समूह में यांत्रिक रुचि को अत्यधिक महत्व देने की प्रवृत्ति पाई गई।

2. गुप्ता, राजीव सागर ने 2013 में जूनियर हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। इनके अध्ययन का उद्देश्य जूनियर हाईस्कूल के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना, जूनियर हाईस्कूल की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना एवं जूनियर हाईस्कूल के समस्त विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। शोध अध्ययन में पाया गया कि जूनियर हाईस्कूल के प्रत्येक छात्र–छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर घरेलू वातावरण का प्रभाव एक समान न होकर अलग–अलग होता है, वही छात्र और छात्राओं के व्यक्तित्व विकास एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव भी पाया गया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि नकारात्मक पारिवारिक वातावरण छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ अधिगम क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

3. गुप्ता और रानी ने 2015 में छात्रों के व्यक्तित्व पर घर एवं आस–पास के वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि घर के वातावरण तथा आस–पास का वातावरण छात्रों के व्यक्तित्व को बढ़ाने में मदद करता है। उन्होंने शोध अध्ययन के पश्चात् पाया कि घर के अच्छे वातावरण का बच्चों के संवेगात्मक, ज्ञानात्मक एवं सामाजिक व्यक्तित्व के विकास पर अनुकूल सार्थक प्रभाव पड़ता है तथा उन्होंने यह भी पाया की अच्छे वातावरण का ही परिणाम होता है कि बच्चे एवं परिवार के सभी सदस्य आपस में प्रेम पूर्वक रहते हैं तथा एक सदस्य दूसरे सदस्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं और इसी दृष्टिकोण के प्रभाव से बालक के अंदर उच्च स्तरीय मूल्यों तथा आदर्शों का विकास होता है, तथा बालक में उत्तम नागरिकता के गुणों का पालन करने के गुणों की क्षमता बनती है।

4. मिश्रा, कल्पना ने 2016 में रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने अध्ययन हेतु दो उद्देश्य निर्धारित किए। विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं व्यक्तित्व विकास के लिए शिक्षक द्वारा किए गए प्रयासों का अध्ययन करना और विभिन्न सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना। उन्होंने अध्ययन में पाया कि छात्रों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है साथ ही साथ बौद्धिक विकास के लिए अनुकूल पाठ्यक्रम की विषय वस्तु का भी प्रभाव व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। साथ ही उन्होंने यह भी पाया कि निम्न और औसत मानसिक बौद्धिक क्षमता वाले छात्रों को शासन के द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रोत्साहन योजनाओं से निम्न एवं औसत बौद्धिक एवं पारिवारिक क्षमता वाले छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व विकास पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

5. पांडेय, साधना ने 2017 में कामकाजी अभिभावक एवं उनके बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य ऐसे कामकाजी अभिभावकों जिसके माता–पिता दोनों घर से बाहर रहकर कार्य करते हैं, उनके बच्चों के संतुलित शारीरिक एवं मानसिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है। साथ–ही–साथ इस नवीन चुनौती में पूर्व के संयुक्त परिवार व्यवस्था एवं वर्तमान के एकल परिवार व्यवस्था की क्या भूमिका दिखाई पड़ती है, का उद्देश्य निर्धारित किया गया। अध्ययन का परिणाम यह पाया गया कि बच्चों का देखभाल करना संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकल परिवारों में ज्यादा कठिन पाया गया वहीं बच्चों की देखभाल के लिए एकल परिवार के कामकाजी अभिभावकों ने प्रायः सभी सहायक रखे हुए पाए गए। एकल परिवारों की तुलना में बच्चों के दादा–दादी, नाना– नानी का सहयोग संयुक्त परिवार में ज्यादा पाया गया। एवं एकल परिवारों में बच्चों की देखभाल में एक महत्वपूर्ण योगदान केवल माता–पिता के मध्य सामंजस्य ही पाया गया। निष्कर्ष के तौर पर व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में पाया गया कि एकल परिवारों के

बच्चों की तुलना में संयुक्त परिवारों में पले बढ़े बच्चे ज्यादा संस्कारी, सामाजिक प्रवृत्ति, परिवारिक संबंधों को समझने वाले, संवेगात्मक रूप से स्थाई प्रवृति के और नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टिकोण से ज्यादा समर्थ पाए गए जो कि एक संस्कारी व्यक्तित्व का प्रमुख गुण है।

व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक :

बालकों के व्यक्तित्व का विकास अत्यंत कठिन कार्य है क्योंकि व्यक्तित्व विभिन्न गुणों का समन्वित संगठन है और व्यक्तित्व के सभी गुणों को बालक में विकसित करने की जिम्मेवारी न केवल माता पिता और शिक्षक की है बल्कि बालक विभिन्न गुणों को समाज के जिस वातावरण में वह रहता है उन सभी लोगों की है जिनके संपर्क में आते समय वह धीरे–धीरे उन सभी के गुणों को आत्मसात करते रहता है। इसलिए बालकों में व्यक्तित्व के निर्माण को प्रभावित करने वाले अनेक कारक हैं जिसमें निम्नलिखित प्रमुख हैं :

1. माता पिता के गुणों का प्रभाव : बालक जब जन्म लेता है तब वह सर्वप्रथम अपने माता और पिता के संपर्क में होता है कहा भी जाता है की बालक की पहली शिक्षक मॉ होती है इसलिए बच्चा सबसे पहले मॉ के गुणों को आत्मसात करता है उसके पश्चात् वह परिवार की सभी सदस्यों के गुणों को धीरे–धीरे सीखता है और आत्मसात करता है। इसलिए देखा जाए तो बालक के व्यक्तित्व के विकास को सबसे ज्यादा माता–पिता के गुण ही प्रभावित करते है।
2. घरेलू वातावरण का प्रभाव : विभिन्न शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास में घरेलू वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है। जिन घरों का घरेलू वातावरण सकारात्मक होता है उन घरो में निवास करने वाले बालकों के व्यक्तित्व का सकारात्मक सर्वांगीण विकास पाया गया है जबकि जिन घरों का घरेलू वातावरण नकारात्मक होता है वैसे घरों में निवास करने वाले बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं होता है।
3. शिक्षक के व्यक्तित्व गुणों का प्रभाव : हम सभी जानते हैं कि शिक्षक बालक के रोल मॉडल माने जाते हैं। इसलिए बालक अक्सर शिक्षक के सारे गुणों को आत्मसात करना चाहता है और उन्हीं के अनुरूप अपने आप को स्थापित भी करना चाहता है। इसलिए बालक के व्यक्तित्व विकास को शिक्षक के व्यक्तित्व गुण प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। विभिन्न शोध अध्ययन से भी यह स्पष्ट हो गया है कि शिक्षक का व्यक्तित्व बालक के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है ।
4. विद्यालययी वातावरण का प्रभाव : विभिन्न शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास को न केवल घरेलू वातावरण ही प्रभावित करते हैं बल्कि विद्यालय के वातावरण का प्रभाव भी बालक के व्यक्तित्व विकास पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। यही कारण है कि प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे विद्यालय में नामांकन कराना चाहते हैं, जिससे कि उनके बालक को उत्तम शैक्षणिक वातावरण में रहने का अवसर प्राप्त हो सके और उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके।
5. साथी समूह के गुणों का प्रभाव : प्रायः ऐसा देखा गया है कि प्रत्येक बालक एक दूसरे साथियों की आदतों, कार्यशैली आदि का अक्सर अनुसरण करते रहते हैं जो धीरे–धीरे उनके व्यक्तित्व का प्रमुख हिस्सा बन जाता है, और वे गुण जो साथी समूह से प्राप्त किए वह गुण व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने लगता है। कभी–कभी यह व्यक्तित्व विकास की सकारात्मक दिशा भी निर्धारित कर देता है। लेकिन ज्यादातर बालक व्यक्तित्व के नकारात्मक पक्ष को जल्दी स्वीकार कर लेते हैं फलस्वरूप यह व्यक्तित्व का सर्वांगीण सकारात्मक विकास को अवरुद्ध कर देता है, इसलिए बालक को अच्छे साथी समूहों में रहने की सलाह अक्सर दी जाती है।
6. सामाजिक वातावरण का प्रभाव : बालक जैसे–जैसे बड़ा होता जाता है उसका सामाजिक दायरा बढ़ता जाता है। वह समाज के विभिन्न लोगों के संपर्क में आने लगता है और बालक भी विभिन्न लोगों से संपर्क स्थापित करना चाहता है। ऐसी स्थिति में बालक जिन लोगों के संपर्क में आता है, उन सभी लोगों के व्यक्तित्व का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। क्योंकि यह सामान्य धारणा है कि बच्चे अनुकरण एवं

अवलोकन द्वारा भी सीखते हैं। उन्हें अवलोकन के द्वारा जो बातें अच्छी लगती है और उन्हें प्रभावित करती है बालक उन गुणों का अनुकरण करते हुए अपने आप में आत्मसात करता है। धीरे–धीरे वे गुण बालक के व्यक्तित्व में दिखने लगते है।

7 आर्थिक स्थिति का प्रभाव : वैश्वीकरण के इस युग में बालक के व्यक्तित्व विकास को परिवार की आर्थिक स्थिति का उसके व्यक्तित्व विकास पर प्रत्यक्ष प्रतिकूल प्रभाव देखा गया है। पूर्व के अनेकों शोध से स्पष्ट हुआ है कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवार के बच्चों में हीन भावना तथा कुंठा जैसे व्यक्तित्व के नकारात्मक गुण पाए गए हैं। परिस्थितिजन्य कारणों से भी आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए परिवारों के बच्चों में झूठ बोलने, चोरी करने सहित अन्य असामाजिक कार्यों में लिप्त पाए गए हैं जिससे उनके व्यक्तित्व विकास पर प्रतिकूल प्रभाव भी पाया गया।

8. धर्म व संस्कृति का प्रभाव : व्यक्तित्व के विकास में धर्म एवं संस्कृति का भी महत्वपूर्ण योगदान पाया गया है क्योंकि प्रत्येक धर्म की अपनी कुछ मूलभूत मान्यताएं होती है। जिसे उस धर्म के मानने वाले लोग दिल व दिमाग से स्वीकार करते हैं और स्वीकार किए गए धर्म के नियमों के अनुरूप कार्यों का निष्पादन भी करते है। यह भी देखा गया है कि मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा एवं गिरजाघर के द्वारा प्रसारित किए जाने वाले धार्मिक प्रवचन का प्रभाव भी व्यक्तित्व के विकास पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। कभी–कभी ऐसा भी देखा गया है कि की गुरुभक्ति के प्रभाव से बालक सन्यासी या धर्मप्रचारक के व्यक्तित्व को स्वीकार करते हुए उसी व्यक्तित्व का स्वामी भी बन जाता है।

9. सांस्कृतिक परंपराओं एवं रीति–रिवाजों का प्रभाव : अक्सर जिस परिवार में बालक का जन्म होता है उस परिवार के माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्ग बालक को अपनी विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं एवं रीति–रिवाजों से परिचित करवाते हैं उन रीति–रिवाजों के प्रति बालक में आस्था भाव उत्पन्न करते हैं और उसी के अनुरूप विभिन्न कार्यों को करते वक्त अनुपालन करने की प्रेरणा देते रहते हैं। धीरे– धीरे जब बालक बड़ा होता है तब उसमें अपनी संस्कृति, रीति–रिवाज, मान्यताओं एवं परंपराओं का प्रत्यक्ष प्रभाव बालक के बोल–चाल, रहन– सहन आदि में परिलक्षित होता रहता है और धीरे–धीरे वे गुण बालक के व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है।

10. मास मीडिया व इंटरनेट का प्रभाव : वर्तमान सूचना एवं संप्रेषण क्रांति के इस यूग में जन संचार के साधनों की सर्वव्यापक उपलब्धता बालक के व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में देखा जा रहा है। पहले रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र, समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएं जैसे जनसंचार के साधन व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करते थे। यह साधन एक प्रकार से नियंत्रित जनसंचार के माध्यम थे, लेकिन वर्तमान आधुनिक संसार में अत्याधुनिक तकनीक पर आधारित डिजिटल संसाधनों एवं मोबाइल तकनीक की आसान उपलब्धता किसी भी सूचना तक मात्र उंगली के एक टच से उपलब्ध हो जाना अनियंत्रित जन संचार के माध्यम है। जो बालक के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित कर रहे हैं। विभिन्न अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि ये अत्याधुनिक सूचना एवं संप्रेषण तकनीक पर आधारित संसाधन बालक के व्यक्तित्व के विकास पर तुलनात्मक दृष्टि से सकारात्मक प्रभाव कम डालते है ज्यादा नकारात्मक प्रभाव ही पाए गए हैं।

निष्कर्ष :

बालक के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक एवं अभिभावक की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर प्रस्तुत शोध कार्य का निष्कर्ष निम्नलिखित पाया गया :–

1. बालक के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षक एवं अभिभावक की भूमिका विषयक समीक्षात्मक अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में यह बात सामने आई है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास को न केवल माता–पिता एवं पूर्वजों से मिले अनुवांशिक गुण ही प्रभावित करते हैं बल्कि जिस वातावरण या परिवेश में बालक निवास करता है उसका भी प्रभाव बालक के व्यक्तित्व के विकास पर पड़ता है।

2. अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि बालक के व्यक्तित्व के विकास में न केवल शिक्षकों और अभिभावकों की ही भूमिका होती है, बल्कि बालक का संबंध जिन संस्थानों और संगठनों से होता है उसका भी प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।
3. अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास को न केवल विद्यालय वातावरण ही प्रभावित करता है बल्कि घरेलू वातावरण का भी प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।
4. समीक्षात्मक अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि बालक के व्यक्तित्व पर साथी–समूह एवं आसपास का सामाजिक वातावरण भी बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करता है।
5. अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास पर धर्म एवं संस्कृति, सांस्कृतिक परंपराओं तथा परंपरागत रीति–रिवाजों का प्रभाव भी पाया गया है।
6. समीक्षात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि बालक के व्यक्तित्व के विकास पर इंटरनेट आधारित अत्याधुनिक डिजिटल उपकरणों जैसे स्मार्टफोन, मोबाइल फोन, टैब इत्यादि उपकरणों का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही प्रभाव पाए गए हैं।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि बालक के व्यक्तित्व के विकास को बहुत सारे कारक प्रभावित करते रहते हैं यह कारक सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही प्रकार का प्रभाव डालते है। यह आवश्यक है कि अभिभावक अर्थात् माता–पिता एवं शिक्षक का ससमय सही मार्ग दर्शन बालक को उत्तम व्यक्तित्व का स्वामी बनाने में सहायक हो सकता है। इसलिए अभिभावक अर्थात् माता–पिता और शिक्षक की भूमिका बालक के व्यक्तित्व विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची :

1. *गुप्ता, राजीव सागर (2013), जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम – 3 (2) जुलाई, 2013 पेज 337–342।*
2. *मिश्रा,कल्पना (2016), रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन, International Journal of Multi-disciplinary Education and Research volume-1, issue-10, December 2016, PP 54-57 /*
3. *पांडेय, साधना (2017), कामकाजी अभिभावक एवं उनके बच्चे, इनोवेशन द रिसर्च कॉन्सेप्ट, वॉल्यूम–2, इश्यू – 9 अक्टूबर, 2017, पेज 165–168।*
4. *खन्ना, अलका (2015), उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में केंद्रीय विद्यालय व राज्य सरकारी विद्यालयों की भूमिका, शोध मंथन, 2015, पेज 1– 7।*
5. *अवस्थी, दिलीप कुमार (2010), बच्चों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालय वातावरण का प्रभाव, श्री प्रभु प्रतिभा, https://www-shreeprabhu-com, blogspot-com> blogspot, retrieved on 04-08-2018!*
6. *कुमार, रोहित (2018), शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन, TRANSFRAME A bilingual Biomonthly Multi-disciplinary International Journal, Jan-Feb 2018, PP 32&36, www.tranceframe.in*
7. *गुप्ता, एसपी एवं गुप्ता, अलका (2007), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, तृतीय संस्करण, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 218 – 243।*
8. *सिंह, अरुण कुमार (2001), शिक्षा मनोविज्ञान, द्वितीय संस्करण, भारती भवन (पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर), पटना, बिहार पृष्ठ 389–427।*

****